लामार्कवाद (Lamarckism)

1. परिचय :

लामार्कवाद (Lamarckism) विकासवाद (Theory of Evolution) से संबंधित एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है, जिसे फ्रांसीसी जीवविज्ञानी जीन बैप्टिस्ट दे लामार्क (Jean Baptiste de Lamarck) ने प्रस्तुत किया था।

उन्होंने अपने विचार वर्ष 1809 में अपनी पुस्तक Philosophie Zoologique में व्यक्त किए।

यह सिद्धांत यह समझाने का प्रयास करता है कि जीवों में नई विशेषताएँ या परिवर्तन कैसे उत्पन्न होते हैं और पीढ़ी दर पीढ़ी कैसे संचरित (inherit) होते हैं।

2. मूल विचार (Basic Idea):

लामार्कवाद के अनुसार –

"जीव अपने वातावरण के अनुसार स्वयं में परिवर्तन करते हैं, और ये अर्जित गुण (Acquired Characters) उनकी संतानों में भी चले जाते हैं।"

अर्थात्, वातावरण और उपयोग-अनुपयोग के प्रभाव से शरीर में जो परिवर्तन होते हैं, वे आने वाली पीढ़ियों को विरासत में मिलते हैं।

3. प्रमुख सिद्धांत (Main Principles of Lamarckism):

(i) वातावरण का प्रभाव (Effect of Environment):

पर्यावरण में परिवर्तन के कारण जीवों को अपने जीवन ढंग में परिवर्तन करना पड़ता है, जिससे शरीर की बनावट पर प्रभाव पड़ता है।

(ii) उपयोग और अनुपयोग का सिद्धांत (Use and Disuse Theory):

जो अंग बार-बार उपयोग में लाए जाते हैं, वे अधिक विकसित हो जाते हैं;

जबकि जो अंग उपयोग में नहीं आते, वे धीरे-धीरे कमजोर होकर लुप्त हो जाते हैं।

(iii) अर्जित गुणों का वंशानुगत संचरण (Inheritance of Acquired Characters):

जीव अपने जीवनकाल में जो गुण अर्जित करता है, वे उसकी संतानों में भी पहुँच जाते हैं।

(iv) अंगों का क्रमिक विकास (Gradual Development of Organs):

नए अंगों का निर्माण धीरे-धीरे और निरंतर उपयोग से होता है।

4. उदाहरण (Examples):

i. जिराफ का लंबी गर्दन वाला होना:

लामार्क के अनुसार, जिराफ़ ऊँचे पेड़ों की पत्तियाँ खाने के लिए अपनी गर्दन को बार-बार ऊपर खींचता था।

निरंतर उपयोग से उसकी गर्दन लंबी हो गई, और यह गुण संतानों में चला गया।

ii. बतख के झिल्लीदार पैर:

पानी में चलने के कारण पैरों की उंगलियों के बीच झिल्ली विकसित हो गई।

iii. साँप का पैरहीन होना:

ज़मीन पर रेंगने के कारण पैरों का उपयोग बंद हो गया, जिससे वे लुप्त हो गए।

5. लामार्कवाद का महत्व (Significance):
यह विकासवाद की दिशा में पहला वैज्ञानिक प्रयास था।
लामार्क ने यह विचार प्रस्तुत किया कि जीव स्थिर नहीं हैं, बल्कि धीरे-धीरे बदलते रहते हैं।
उन्होंने वातावरण को विकास का एक सक्रिय कारण माना।
6. आलोचना (Criticism of Lamarckism):
अर्जित गुणों का वंशानुगत संचरण आज वैज्ञानिक रूप से असिद्ध माना गया है।
ऑगस्ट वाइज़मैन (August Weismann) ने अपने Germ Plasm Theory के माध्यम से सिद्ध किया कि अर्जित गुण जनन कोशिकाओं के माध्यम से नहीं जाते।
आधुनिक आनुवंशिकी (Genetics) ने यह स्पष्ट किया कि वंशानुगत लक्षण जीन (Genes) के माध्यम से मिलते हैं, न कि अर्जित गुणों से।
7. आधुनिक दृष्टिकोण (Modern View):
आज लामार्कवाद को पूर्ण रूप से अस्वीकार नहीं किया गया है, बल्कि माना जाता है कि पर्यावरणीय प्रभावों से कुछ हद तक जीनों की अभिव्यक्ति (gene expression) प्रभावित हो सकती है — जिसे Epigenetics के नाम से जाना जाता है।
8. निष्कर्ष (Conclusion):
लामार्कवाद जीवों के विकास को समझाने का पहला व्यवस्थित प्रयास था।
हालाँकि बाद में डार्विनवाद (Darwinism) ने इसे प्रतिस्थापित कर दिया, फिर भी लामार्क का योगदान अमूल्य है, क्योंकि उन्होंने यह स्थापित किया कि —
"प्रकृति में परिवर्तन निरंतर और क्रमिक है, और जीव अपने परिवेश के अनुसार स्वयं को ढालते हैं।"